❖ वर्ष 51 ❖ अंक 03 ❖ मार्च 2024

₹ 25/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 51 • अंक 03 • मार्च 2024 • पृष्ठ 44

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री राकेश मुटरेजा
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर
कॉम्पलेक्स, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : डॉ० विजय शर्मा

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
editorial @ nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी के दिव्य वचन
6. सम्पूर्ण हरदेव बाणी
20. पहेलियां
34. पढ़ो और हँसो
41. रंग भरो
42. आपके पत्र मिले

चित्रकथायें

12. चित्रकथा
30. किट्टी

कहानियां

8. सम्मान
— प्रवीण कुमार सहगल
11. कोयल और बगुला
— राधेलाल 'नवचक्र'
18. झूठ का जाल
— राजकुमार जैन 'राजन'
21. क्रोध न करें
गुलशन कुमार
24. लालच का फल
— गोपाल जी गुप्त
28. परिश्रम
— शिवचरण मंत्री
38. होली पर सीख
— ललित शौर्य

कविताएं

7. कदर समय की
— हरजीत निषाद
10. गति ही है जीवन का गहना
— घमण्डीलाल अग्रवाल
17. रंग उड़ाती होली आई ...
— शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी
17. होली का रंग
— राजेंद्र निशेश
23. सूरज देता है संदेश
— शैलेन्द्र कुमार
23. चिड़िया
— प्रदुमन पासवान
29. धोने हाथ जरूरी
— इन्द्र मल्होत्रा
29. हमारे आसपास
— कमलसिंह चौहान
37. समय से, माँ सुन रही हो न
— मीरा सिंह मीरा

विशेष/लेख

16. कैसे छुड़ाएं होली के रंग
— किरणबाला
26. वैज्ञानिक प्रश्नोत्तरी
— विभा वर्मा
36. सतमाई
— परशुराम शुक्ल

सबसे पहले

मेडिटेशन

कुछ विद्यार्थी दादा जी से मिलने गए। सभी ने दादा जी को प्रणाम किया और सादर निवेदन किया, ''दादा जी, कृपया हमारा मार्गदर्शन करें और हमें बताएँ कि मेडिटेशन क्या होता है क्योंकि हमने मेडिटेशन के बारे बहुत कुछ सुन तो रखा है परन्तु वह पूरी तरह हमारी समझ में नहीं आया है।''

दादा जी ने कहा, ''बच्चो क्या आप मेरी बात ध्यान से सुनोगे।'' सभी ने एक स्वर में हाँ जी कहा। सभी बच्चे सतर्क हो गए और सुनने को लालायित हो उठे। अब दादा जी ने कहा, ''आप सभी ने नट को करतब दिखाते हुए तो देखा ही होगा।'' सभी ने झट से हाँ कह दिया। एक बच्चे ने खड़े होकर कहा, ''वह तो हमेशा ऊँचाई पर बँधी रस्सी के ऊपर चलकर एक तरफ से दूसरी तरफ बाएँ–दाएँ झुकते, सम्भलते हुए जाता है और वह गिरता भी नहीं।''

दादा जी ने कहा, ''यह मेडिटेशन की ओर पहला कदम है। उस समय नट को अपनी जान का खतरा होता है और उसका मन केवल उसी कार्य पर स्थिर रहता है। वैसे मन की फितरत है कि वह हर समय इधर–उधर भागता रहता है। वह बहुत ही कम टिकता है। दूसरी बात यह है कि नट हमेशा सन्तुलन बनाए रखता है। वह बाएँ अधिक हो जाए तो भी गिर जाएगा और दाएँ अधिक हो जाए तो भी गिर जाएगा। तीसरी बात वह हर स्थिति में संभलने का प्रयास करता है, उस समय उसका पूरा ध्यान अपनी जान बचाने का होता है।

दादा जी ने एक और बात बच्चो से पूछी कि क्या आप सभी स्वामी विवेकानन्द जी को जानते हैं। सभी ने एक स्वर में कहा, ''हम अच्छी तरह से जानते हैं।'' दादा जी ने कहा, ''एक बार स्वामी विवेकानन्द जी खुले आसमान के नीचे, एक वृक्ष की ओट में बैठकर एक पुस्तक पढ़ रहे थे। उसी दौरान एक व्यक्ति उनके पास आया और उनसे पूछने लगा कि स्वामी जी क्या आपके सामने से अभी कोई बारात गुजरी है। उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे नहीं मालूम। उस व्यक्ति को स्वामी जी के उत्तर से निराशा हुई और उसने समझा कि शायद ये झूठ बोल रहे हैं। फिर भी उस व्यक्ति ने प्रश्न किया शादी की बारात में इतने ढोल–धमाके अनेकों शोर–शराबे के बीच उसमें शामिल सदस्य नाचते–गाते हुए जाते हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि मुझे नहीं मालूम। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मैं इस पुस्तक को पढ़ने में इतना संलग्न था कि मेरा मन किसी ओर गया ही नहीं। दादा जी ने कहा, ''एकाग्रचित्त होकर पढ़ना, मन को उस समय केवल उसी कार्य में लगाना ही वास्तव में ध्यान यानि मेडिटेशन है।''

प्रिय साथियो! हम जीवन में जो कार्य करते हैं चाहे वह पढ़ाई हो, खेल हो, कार्यालय का कोई कार्य हो, व्यापार हो, सेवा हो या हम किसी को सुन रहे हों अगर हम उस समय अपनी पूरी तन्मयता के साथ, एकाग्रचित्त होकर, मन को स्थिर करके एवं अपना हर तरह से सन्तुलन बनाकर रखें तो वह मेडिटेशन ही हो जाता है अर्थात् उस समय हमारा ध्यान कहीं और न होकर उसी कार्य में लिप्त हो जाना ही हमारी पूजा बन जाती है। इसलिए कहा गया है कि Work is Worship. (कर्म ही पूजा है) खाना खाएँ, पढ़ें, खेलें, चाहे नाचें, पूरी तरह से हर क्षण को जीवन्त होकर जिएँ। जागरूकता के साथ मन को स्थिर करके जीना ही वास्तव में हमारी हर क्षेत्र में प्रगति एवं सफलता को सुनिश्चित करता है।

– विमलेश आहूजा

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी के दिव्य वचन

- दुनिया में हर चीज बदल जाती है पर हर समय का सुकून, हर समय की सहजता, हर समय की स्थिरता, परमात्मा के साथ जुड़कर ही प्राप्त होती है।
- निराकार–प्रभु को जिस किसी भी नाम से बुलाएं, यह सत्य है। यह हमेशा से सत्य रहा है और आगे भी सत्य ही रहेगा।
- परमात्मा ने प्रेम करने के लिए ही यह संसार बनाया है, एक–दूसरे से नफरत करने के लिए नहीं।
- अहंकार से लाभ नहीं, नुकसान ही होता है।
- अगर हम सुकून में हैं तो हम जहाँ भी, जिससे भी मिलेंगे, अपने अन्दर का वही चैन–सुकून हर एक को दे पाएंगे।
- भक्ति सौदा नहीं है, इसमें कोई शर्तें नहीं होतीं। जितना ज्यादा समर्पित होकर, इस परमात्मा के साथ जुड़कर, हर समय शुकराने में रहेंगे, उतना ही ब्रह्मज्ञान मन में टिकेगा और ब्रह्मज्ञान के मन में टिकने से उतना ही सुकून में जिएंगे।
- भक्ति, परमात्मा को जानकर ही होती है और भक्ति निःस्वार्थ होनी चाहिए।
- परमात्मा को जानने के बाद मन से भय, स्वार्थ और अहंकार दूर हो जाता है। हानिकारक सोच और नकारात्मक विचार खत्म हो जाते हैं।
- भक्ति के लिए किसी विशेष स्थान या समय की आवश्यकता नहीं, भक्ति तो ईश्वर के एहसास में रहते हुए हर समय सम्भव है।
- जीवन में सब कुछ परमात्मा की इच्छा से प्राप्त होता है। हमें अपना प्रयास तो करना है लेकिन उसका फल परमात्मा की कृपा पर निर्भर है।
- परमात्मा की प्राप्ति करना ही मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है।
- जिस प्रकार प्रकृति को स्वच्छ रखना भी हमारा कर्तव्य है। उसी प्रकार इस जीवन को स्वच्छ बनाने के लिए सत्संग करना अति आवश्यक है।
- ब्रह्मज्ञान, भ्रमों से निजात दिलाने का माध्यम है। इसलिए कहा गया है 'ब्रह्म की प्राप्ति, भ्रम की समाप्ति'।
- भक्त और भगवान का नाता ब्रह्मज्ञान के बाद जुड़ जाता है। ब्रह्मज्ञान के बाद भक्त को भगवान हर समय, हर जगह महसूस होता है।
- परमात्मा के एहसास में जितना अधिक हम रहेंगे उतना ही अधिक मानवीय गुण हमारे जीवन में आते रहेंगे और हमारा मन प्रेमाभक्ति में तल्लीन रहेगा।
- परमात्मा के साथ जुड़कर निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करते हुए ही अच्छा इंसान बना जा सकता है।
- ब्रह्मज्ञान हो जाने के पश्चात् ही मानव मुक्ति का हकदार भी बन जाता है।

– संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

सम्पूर्ण हरदेव बाणी

पद संख्या–2

सबका साक्षी सर्व आधारा तू निर्गुण निरंकार है।
कैसे कोई गाये तेरी महिमा अपरम्पार है।
असीम है तू अनन्त है तू सबमें ही है व्यापक तू।
कारण रूप जगत का तू है सृष्टि का संचालक तू।
सच्चिदानंद विराट स्वरूपा पूरण से भी पूरण तू।
अजन्मा है अविनाशी है ईश्वर नित्य सनातन तू।
अडोल है तू अखण्ड है तू सत् स्वरूप परमेश्वर तू।
अभेद है तू अछेद है तू नारायण जगदीश्वर तू।
लोक तू ही परलोक तू ही है आर तू ही है पार तू ही।
हे पुरुषोत्तम दो जहां की है सच्ची सरकार तू ही।
तुझ में ही ये ध्यान टिका हो तुझ में ही मन लगा रहे।
कहे 'हरदेव' कि स्वांस है जब तक नाता तुझसे जुड़ा रहे।

पद संख्या–3

तू जल में है तू थल में है कण कण में है एक तू ही।
हर पत्ते हर डाली में हर उपवन में है एक तू ही।
नदियों की कल कल में तू है झरनों की झर झर में तू।
सावन की रिमझिम में तू है वायु की सर सर में तू।
कलियों की कोमलता में है फूलों की महक में तू।
पपीहे की है पिहु पिहु में कोयल की चहक में तू।
यहां तू ही है वहां तू ही है चहूं दिशा में एक तू ही।
संध्या में प्रभात में भी दिवस निशा में एक तू ही।
तू सूरज में तू चंदा में तारा गण में एक तू ही।
कहे 'हरदेव' गुरु से जाना चौदह भुवन में एक तू ही।

कदर समय की

– हरजीत निषाद

कदर समय की जो करते हैं,
जीवन में आगे बढ़ते हैं।

समय पर पक्षी नित उठते हैं,
यहाँ वहाँ दाना चुगते हैं।
कभी नहीं आलस करते हैं,
खा भरपेट मस्त रहते हैं।।

हर हालत में खुश रहते हैं,
कदर समय की जो करते हैं।

समय पर बोता बीज किसान,
भर उठता उसका खलिहान।
समय पर चलकर वायुयान,
पहुँचाते जापान या ईरान।।

कभी न पीछे वो रहते हैं,
कदर समय की जो करते हैं।

कछुआ जीता धीमे चलकर,
पर खरगोश है हारा सोकर।
समय बिताते जो रो–धोकर,
जीवन में खाते वो ठोकर।।

विजय सदा हासिल करते हैं,
कदर समय की जो करते हैं।

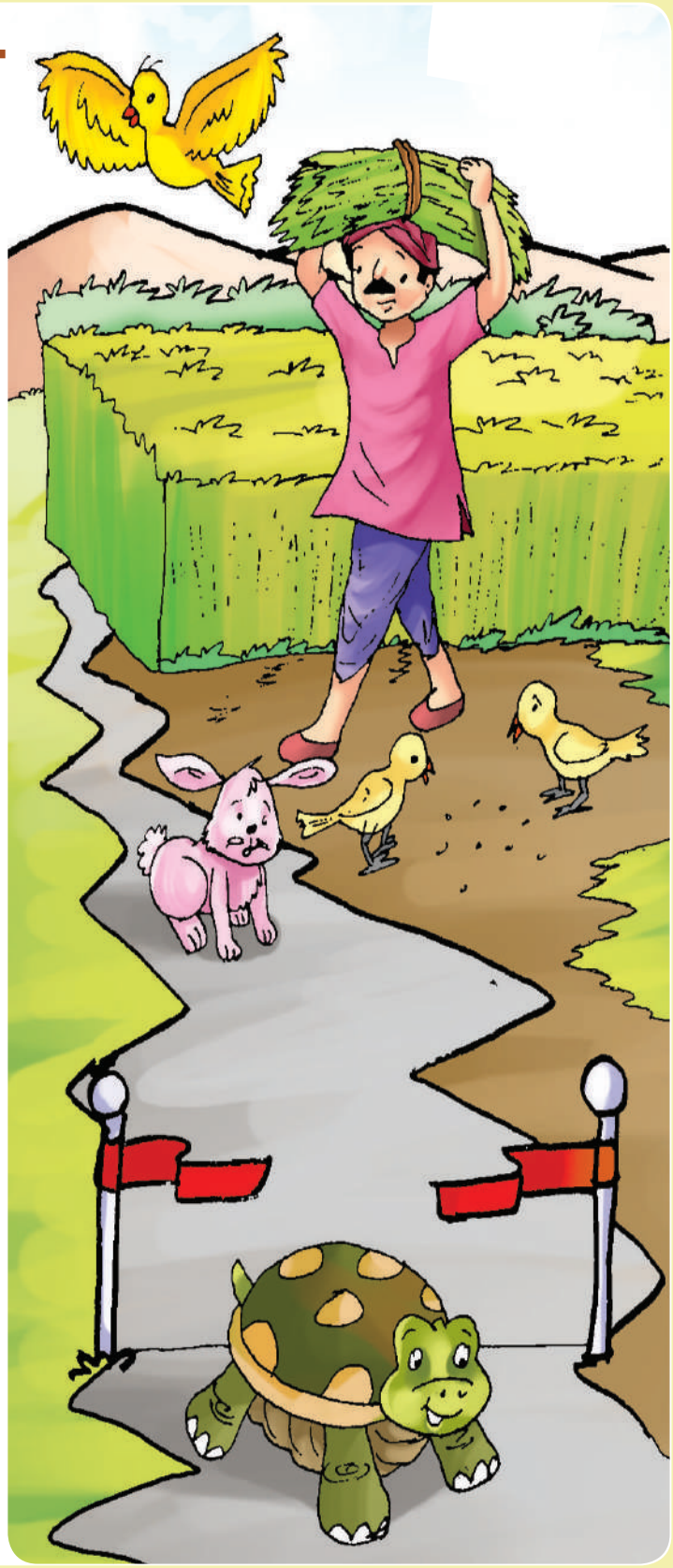

सम्मान

– प्रवीण कुमार सहगल

छोटी–सी गुंजन बिटिया स्कूल से दौड़ती घर पहुँची तो सीधे दादी के पास गई और चहकते हुए बोली, "दादी, मैं दौड़ में फर्स्ट आई हूँ। मुझे ईनाम में यह कप मिला है।"

दादी ने अपना चश्मा लगाया और कप अपने हाथों में लेकर बोली, "शाबाश बिटिया, यह तो बहुत प्यारा कप है। अच्छा बताओ, इस बात पर तुम्हें मेरे पास से क्या मिलेगा?"

गुंजन ने खुशी से उचकते हुए कहा, "पाँच रुपया।"

"कैसे जाना कि मैं तुम्हें पाँच रुपया दूँगी?" दादी ने प्रश्न किया।

"वाह! दादी भूल गईं। इसके पहले जब भी मैं परीक्षा में पहले नंबर पर आई थी तब आपने मुझे पाँच रुपये ही तो दिया था।" गुंजन बोली।

"तो उन रुपयों का तुमने क्या किया?" दादी ने पूछा।

"वो तो मैंने गुल्लक में डाल दिया था।" गुंजन ने जवाब दिया।

"देखो, अब जब मैं तुमको पाँच रुपया दूँ तो उसे गुल्लक में मत डालना। जो तुम्हारे मन में आए उसमें खर्च करना, ठीक है।" यह कहकर दादी ने गुंजन को पाँच रुपये दिये और कहा, "जा, इससे कुछ खरीद ले।"

बाजार गुंजन के घर के पास था। गुंजन पाँच रुपये लेकर बाजार की तरफ दौड़ पड़ी। वहाँ उसने सड़क पर खूब भीड़ देखी। सड़क पर वर्दी पहने सैनिक धुन बजाते मार्च कर रहे थे और सड़क के दोनों ओर लोग कतारबद्ध खड़े थे। गुंजन ने देखा कि भीड़ में प्रायः सभी लोगों के हाथों में पुष्पगुच्छ थे। उसने सोचा कि शायद सड़क पर से किसी परी की सवारी जा रही होगी और उसको फूल भेंट करने के लिए ही लोग जमा हैं। फिर उसने सोचा कि हो सकता है कि कोई राजकुमार जिसकी कहानी दादी बताती थी, वही जा रहा हो। इस तरह के अनेक विचार उसके मन में उठे। वह वहाँ से दौड़ पड़ी और फूल वाले के पास जाकर उसने दादी का दिया पाँच रुपया दिखाकर कहा, "अंकल, क्या पाँच रुपये में आप मुझे एक फूलों का गुच्छा दे दोगे?"

फूल वाले ने मुस्कुराकर कहा, "बेटा, इन रूपयों में तो मैं गुलाब के फूल ही दे सकूँगा।"

गुंजन ने कहा, "ठीक है" और वह गुलाब के फूल लेकर भीड़ की तरफ दौड़ी। वह भीड़ में से अन्दर जाने का प्रयास कर रही थी लेकिन जा नहीं पा रही थी। तभी एक जवान सैनिक की नज़र उस पर पड़ी। वह दूसरी तरफ से भीड़ को चीरता हुआ गुंजन के पास आया और गुंजन को गोद में उठाकर अपने साथ वहाँ ले चला जहाँ सैनिक मार्च करते आगे बढ़ रहे थे और उनके पीछे एक फूलों से ढकी तोपगाड़ी जा रही थी। वह सैनिक उसे तोपगाड़ी के पास ले

गया। अचानक बैंड की धुन बंद हो गई और मार्च करते सैनिक रूक गये। जवान ने गोदी से उतारकर गुंजन को तोपगाड़ी के पायदान पर खड़ा कर दिया। गुंजन ने तुरन्त उस तोपगाड़ी के फूलों के ढेर पर अपने गुलाब के फूल रख दिये। सब सैनिकों ने गुंजन को सैल्यूट किया और उनकी देखा–देखी में गुंजन ने भी तोपगाड़ी के पायदान पर ही खड़े रहकर अपना नन्हा–सा हाथ उठाकर सैल्यूट किया। तभी बैंड की धुन पुनः बज उठी।

जवान ने आगे बढ़कर गुंजन को फिर से गोदी में उठा लिया और सड़क के किनारे उतार दिया। गुंजन ने देखा कि जवान की आँखें गीली हो उठी थीं। गुंजन ने अपनी नन्ही–सी हथेली से उस जवान के आँसू पोंछे। पास खड़ी भीड़ में से किसी ने गुंजन की पीठ थपथपाई तो किसी ने उसे गोदी में उठाकर उसके गालों पर प्यार किया। गुंजन खुशी से दौड़ती अपने घर की तरफ जाने लगी। तभी फूलों की दुकान वाले ने उसे बुलाया और कहा, "बिटिया रानी, तूने तो मेरे दिये फूलों की बहुत शान बढ़ाई है। ये अपने दिए हुए रुपये वापिस ले लो।"

गुंजन ने घर आकर दादी को सारा किस्सा बताया तो दादी ने कहा, "गुंजन बिटिया, जानती है तूने क्या किया? तूने वे गुलाब के फूल एक शहीद को भेंट किया है। मेरे दिए पैसों का तूने सम्मान किया है।" गुंजन ने उत्सुकतापूर्वक पूछा, "दादी, शहीद किसे कहते हैं?"

दादी ने उत्तर दिया, "बिटिया, वह व्यक्ति जो अपने देश की रक्षा में सदा खड़ा रहता है, अपने कर्तव्य का पालन करता है, सत्य की निष्ठा रखता है और दुश्मनों से लड़कर जब लड़ाई में अपनी जान गँवा देता है तो उस व्यक्ति को हम शहीद कहते हैं। ऐसे व्यक्ति जो कि किसी भी लड़ाई में देश की सुरक्षा करते हुए या देश के नागरिकों की सुरक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देते हैं, ऐसे व्यक्तियों को शहीद कहा जाता है। देश के लिए शहीद होने वाले ऐसे वीर जवानों पर उनके माता–पिता के साथ–साथ पूरा देश भी उनकी शहादत पर गर्व करता है।"

तब गुंजन ने अपनी नन्ही–सी हथेली खोलकर दादी को बताया, "दादी, उस फूल वाले ने भी मुझे बुलाकर मेरा पाँच रुपया वापिस कर दिया और कहा कि मैंने उसके दिए फूलों की शान बढ़ाई है। इसलिए वह रुपये वापिस दे रहा है। मैंने वह रुपये ले लिये। ठीक किया ना, दादी।"

दादी ने गुंजन को गोदी में उठाकर कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, तू पैसे का अच्छा उपयोग करना जानती है, इसलिए फूल वाले ने तुझे वह रुपया वापिस किया है।"

गति ही है जीवन का गहना

– घमण्डीलाल अग्रवाल

सरिता कल–कल बहती जाती,
हवा सनन–सन धूम मचाती।
सबने सीखा गतिमय रहना–
गति ही है जीवन का गहना।।

रूका हुआ पानी दरिया का–
भारी बदबू फैलाता है।
एक जगह पर पड़ा रहे जो–
वह पत्थर ठोकर खाता है।।

चलने में सुख मिले अजूबा–
सचमुच यही सभी का कहना।
गति पूरा करती सपनों को–
गति से नाता जोड़े रखना।।

नया सवेरा भू पर आए–
नहीं विराम अवस्था लेना।
गति देती यह ही संदेशा–
लहरों जैसा सदा उछलना।।

धरती की गति सभी जानते–
उपग्रह भी गतिशील हमेशा।

कोयल और बगुला

प्रेरक–प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

फागुन का महीना था। बसन्त ऋतु थी। आम के पेड़ पर बैठकर सुबह–सुबह कोयल कुहू–कुहू गा रही थी।

कोयल की मीठी और सुरीली आवाज सुनकर एक बगुला उसके करीब आ पहुँचा। फिर झट बोला, ''कोयल बहन, तुम्हारी आवाज में तो बहुत मिठास है।''

''तो फिर?''

''मगर तुम्हारी सूरत तो काली है। भगवान ने सचमुच बड़ी गलती की है।'' बगुला बोला।

''कैसी गलती?'' कोयल उत्सुक हो उठी।

''जैसी तुम्हारी सूरत है, आवाज भी वैसी ही होनी चाहिए।'' बगुला ने कहा, ''देखो, मैं कितना गोरा–चिट्टा हूँ, सफेद झकझक। तुम्हारी सुरीली आवाज तो मुझे मिलनी चाहिए।''

''बगुला भाई, एक बात कहूँ?'' कोयल बोली।

''जरूर कहो।''

''भगवान ने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है। उसने कोई गलती नहीं की है।''

''कैसे नहीं की है?'' कोयल की बात मानने के लिए बगुला एकदम तैयार नहीं था।

''जरा सोचो, तुम्हारा रंग उजला है तो तुम्हें उसका कितना घमण्ड है।'' कोयल समझाकर बोली, ''अगर तुम्हारी आवाज भी सुरीली और मीठी होती तो तुम्हारा घमण्ड क्या और नहीं बढ़ जाता? सदैव याद रखो, घमण्डी की अच्छी आवाज भी भद्दी हो जाती है। उसका अच्छा रूप भी खराब लगने लगता है। अतएव भगवान ने तुम्हें जैसी भी आवाज दी है, ठीक है। खूब सोच–विचार कर दी है, ऐसा समझ लो।'' कोयल की बातों में गहरी सच्चाई थी। सुनकर बगुला के मुँह की बोली बन्द हो गयी। ❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

एक गाँव में एक गरीब किसान अपनी बेटी के साथ रहता था। वह मजदूरी कर अपना गुजारा करता था।

किसान राजा के पास अपनी समस्या लेकर गया तो राजा ने थोड़ी–सी जमीन किसान को खेती करने के लिए दे दी।

एक दिन किसान खेत में जुताई कर रहा था। तभी उसका हल किसी कठोर चीज से टकराया।

किसान ने जैसे ही खेत को खोदना शुरू किया। वैसे ही उसे सोने की एक ओखली मिली।

किसान सोने की ओखली अपनी बेटी को दिखाकर बोला– यह हमें राजा की जमीन से मिली है इसलिए इसे राजा को दे देनी चाहिए।

बेटी ने मना करते हुए कहाँ, नहीं पिताजी राजा ने अगर सोने की मूसली भी माँग ली तो आप क्या करेंगे?
किसान ने बेटी की बात न सुनकर ओखली राजा के पास ले गया। दरबार में वही हुआ जो उसकी बेटी ने कहा था।
राजा ने किसान को दोषी ठहराकर कैदखाने में डाल दिया। किसान को अपनी बेटी की बात न मानने का बहुत अफसोस हुआ।

किसान कैदखाने में रोते–रोते बड़बड़ाता है कि काश! उसने अपनी बेटी की बात मान ली होती। राजा वहाँ से गुजरते हुए यह बात सुन लेता है।
राजा ने किसान से पूछा कि वह ऐसा क्यों कह रहा है? किसान ने राजा को सारी बात बताई। राजा को बहुत अफसोस हुआ और उसने किसान को छोड़ दिया।
राजा ने किसान की बेटी की बुद्धिमानी की तारीफ की और राजा ने सारी जमीन किसान की बेटी के नाम कर दी।
शिक्षा : ईमानदारी और सूझबूझ से सभी समस्याओं का हल निकल जाता है।

कैसे छुड़ाएं होली के रंग

– किरणबाला

रंगों को छुड़ाना भी बड़ी टेढ़ी खीर है। इन्हें छुड़ाने का भी एक तरीका है। गुलाल को कभी पानी से न धोएं अन्यथा वह आपको रंगना शुरू कर देगा। बेहतर होगा कि उसे सूखे कपड़े से झाड़ लें। सिर में गुलाल पड़ी तो तो कंघी कर ले, तब शैम्पू से बाल धोएं। रंगों को जितनी जल्दी छुड़ाया जाए, वे उतनी ही आसानी से छूट जाते हैं, विलंब करने पर वे बड़ी मुश्किल से छूटते हैं।

होली के रंग छुड़ाने के लिए मिट्टी का तेल, चूने का पानी आदि का इस्तेमाल न करें, साबुन, पानी और उबटन से ही उन्हें छुड़ाएं। रंग छुड़ाने के लिए गर्म पानी की बजाय ठंडे पानी का ही इस्तेमाल करें क्योंकि गर्म पानी से रंग उल्टे पक्के हो जाते हैं। इससे त्वचा छिल सकती है। रंग छुड़ाने के लिए नहाने वाले किसी भी कोमल साबुन का इस्तेमाल करें। साबुन से उत्पन्न झाग को कपड़े से पोंछते जाएँ। इससे रंग कपड़े पर उतर जाएगा और शरीर पर लगा रंग हल्का होता जाएगा। रंग छुड़ाने के लिए कभी भी पत्थर के झांव आदि का इस्तेमाल न करें अन्यथा त्वचा बुरी तरह छिल जाएगी।

रंग छुड़ाने का आसान तरीका है नारियल के तेल में रूई को भिगोकर धीरे–धीरे रंग छुड़ाएं। ऐसा करने से जलन नहीं होगी। यदि त्वचा पर गहरा रंग लगा है तो बेहतर होगा कि पहले नींबू से त्वचा को साफ कर लें, फिर उबटन लगाने से रंग छूट जाएगा। सिर के बालों से रंग निकालते समय या धोते समय अपनी गर्दन को इस प्रकार रखें कि उसका रंग शरीर के अन्य हिस्सों पर न पड़े। यदि नाखूनों के भीतर रंग चढ़ जाए तो उस जगह नींबू को रगड़ें।

रंग छुड़ाने के बाद त्वचा में जलन न हो इसके लिए दूध व हल्दी का लेप लगा लेना चाहिए। रंग छुड़ाने के बाद हल्की–सी जलन रह जाए तो ग्लिसरीन में गुलाल जल मिलाकर कुछ देर लगाएं और थोड़ी देर बाद गुनगुने पानी से धो लें। यदि एक बार रंग में रंग न निकले तो परेशान न होएं। एक दो दिन में निकल जाएगा। एक बार में ही रंग निकालने की कोशिश त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगी। ❖

रंग उड़ाती होली आई...

– शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

रंग उड़ाती मन बहलाती,
होली आई धूम मचाती।
रंग–बिरंगी प्यारी–प्यारी,
हुड़दंग मचाती होली आई।।

होली है, की गूंज मचाती,
चहुं दिशाओं में छाईं बोली।
मन बहलाती, धूम मचाती,
रंग उड़ाती होली आई।।

लाल, हरे और नीले पीले,
रंग में सबको है रंग जाती।
मन बहलाती, धूम मचाती,
रंग उड़ाती होली आई।।

सद्भावना का संदेशा देती,
देखो प्यारी प्यारी होली आई।
रंग–बिरंगी प्यारी–प्यारी,
हुड़दंग मचाती होली आई।।

होली का रंग

– राजेंद्र निशेश

चुहिया रानी ने होली में,
मालपुआ बनवाए।

महक सूँघकर इनकी न्यारी,
हाथी राजा आये।

भालू जी संग में अपने,
रंग, पिचकारी लाये।

सूखा रंग लिए हाथों में,
गिरगिट जी मुस्काए।

धमा–चौकड़ी खूब मची तब,
सब लौटे हर्षाए।

झूठ का जाल

– राजकुमार जैन 'राजन'

नदी किनारे के सुन्दरवन में बहुत से जानवर मिलजुल कर रहते थे। सुख–दुःख में वे सब एक–दूसरे के काम आते थे। उनमें कालू कौआ बहुत दुष्ट और चालबाज था। वह सभी जानवरों की चापलूसी करके अपना काम चला लेता था। इससे भी बुरी आदत उसकी थी कि वह झूठ बहुत बोलता था।

हरियल तोता, लम्बू जिराफ और जंगल के सब जानवर कालू को समझाते कि झूठे और चापलूस प्राणी का समाज में मान–सम्मान नहीं होता। फिर ऐसी आदत कभी–कभी स्वयं के लिए ही मुसीबत का कारण बन जाती है। लेकिन कालू किसी की बात की ओर ध्यान नहीं देता था।

एक बार जंगल में 'साक्षरता अभियान' छिड़ा। जंगल के सब जानवरों ने इसमें बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। लम्बू जिराफ, चिम्पू खरगोश, मोटू भोलू और फुदकू बन्दर ने घूम–घूमकर जंगल के सब जानवरों को पूरी रुचि से पढ़ाया। जानवरों को पढ़ाई का महत्व समझाया।

वन में कालू कौआ ही एक मात्र ऐसा प्राणी बचा जिसने पढ़ना–लिखना कुछ भी नहीं सीखा। जंगल के जानवरों की मेहनत का ही परिणाम था कि जंगल के राजा शेरू ने सुन्दरवन को सम्पूर्ण 'साक्षर वन' का खिताब दिया।

एक दिन हरियल तोता और लम्बू जिराफ ने कालू से कहा– भैया, तुम भी पढ़ना–लिखना सीख लो; तुम्हारे काम आएगा। कालू का मन पढ़ाई की ओर बिल्कुल न था वह चुप रहा।

सुन्दरवन का कोई न कोई जानवर कालू को हरदम पढ़ना–लिखना सीखने को कहता रहता। अब उसको सबका बार–बार कहना बुरा लगने लगा था। उसने मन ही मन निर्णय लिया कि अब वह इस वन में नहीं रहेगा। उड़कर दूर किसी दूसरे वन में जा बसेगा।

अगले दिन कालू जंगल में कहीं दिखाई नहीं दिया। उसका घोंसला खाली पड़ा था। घोंसला छोड़कर कालू उड़ गया था।

उड़ते–उड़ते वह दूर श्रीवन में जा पहुँचा। वह एक पेड़ की डाल पर बैठ गया। उस पेड़ पर मोनू कबूतर, गुलगुल गिलहरी और फिसी चिड़िया बैठी थी। कालू को देख मोनू कबूतर बोला– तुम कहाँ से आए हो भैया। क्या रास्ता भटक गये हो?

–मैं सुन्दरवन से आया हूँ– कालू बोला। हमारे वन के सभी प्राणी पढ़ना–लिखना सीख गये हैं। मैंने ही तो सुन्दरवन के प्राणियों को साक्षर किया है। अपनी आदत के मुताबिक कालू ने झूठ बोला।

यह सुनकर पेड़ पर बैठे सभी जानवर बहुत खुश हुए। वे कालू को जंगल के राजा शेर सिंह जी के पास ले गये। उन्होंने कालू तथा सम्पूर्ण सुन्दरवन के बारे में महाराज शेर सिंह को बताया।

–क्या तुम श्रीवन के प्राणियों को भी पढ़ना–लिखना सिखलाओगे?– महाराज शेर सिंह ने कालू से कहा– तुम्हारे रहने तथा भोजन का बंदोबस्त राजकोष की ओर से करा दिया जाएगा।

–हाँ, हाँ, क्यों नहीं।

महाराज शेर सिंह ने कालू को श्रीवन के अनपढ़ प्राणियों को साक्षरता के लिए नियुक्त कर दिया।

कालू को कुछ आता–जाता तो था नहीं। शीघ्र ही उसकी पोल खुल गई। उसकी शिकायत हुई। उसे शेर सिंह के दरबार में उपस्थित होना पड़ा। राजा ने उसे 'झूठ बोलकर धोखा देने' के आरोप से मृत्यु दण्ड सुनाया।

जंगल के सभी जानवर कालू के मृत्यु दण्ड को देखने एकत्रित थे।

महाराज शेर सिंह का इशारा पाते ही भालू मंत्री कालू की गर्दन मरोड़ने उठा ही था कि वह एक जोरदार उड़ान भरकर आकाश में खो गया।

कालू पुनः अपने सुन्दरवन में आ पहुँचा। उसे देखकर सभी जानवरों को बड़ी खुशी हुई।

कालू बोला– भाईयों! तुम जो मुझे झूठ न बोलने की सीख देते थे, वह ठीक थी। आज मैं अपने ही झूठ के जाल में फंस गया था। बड़ी मुश्किल से प्राण बचाकर भाग आया हूँ।

यह कहकर कालू कौए ने सारा वृतांत कह सुनाया। कालू की बात जब खत्म हुई तो सब जानवरों ने देखा, कालू की आँखों में सच की चमक उभर आई थी।

–चाचा आज से आप मुझे पढ़ायेंगे।– कालू ने लम्बू जिराफ से कहा। सब जानवर बेहद खुश थे।❖

पहेलियाँ

— गोविन्द भारद्वाज

1. रोज सवेरा आता जल्दी,
खबरें अपनी लाता जल्दी।
चाहे कैसा भी हो मौसम,
स्नेह सभी का पाता जल्दी।।

2. शहर पृथ्वीराज चौहान का,
है हृदय राजस्थानी।
इतिहास के पन्नों पर लिखी,
सच्ची जो अमर कहानी।।

3. किला लाल जहाँ बना है,
बनी वहीं कुतुबमीनार।
इंडिया गेट स्वागत करे,
इस शहर से मिलता प्यार।।

4. पहले हरी फिर लाल जो,
मसालों की है सरदार।
नमक संग जोड़ी जमती,
सब्जी में लगे दमदार।।

5. समय सदा रोज बताती,
टिक– टिक शोर मचाती।
दो सुइयों का खेल बड़ा,
आपस में जोर लगाती।।

6. जहाँ पहुँचें माँगे मुराद,
जले दीप, चढ़े प्रसाद।
साढ़े तीन अक्षर का नाम,
होती पूजा सुबह–शाम।।

7. कौन पुरुष वो देश का,
कहलाता सत्यवादी।
डिगा न सकी सत्यपथ से,
जिसको महाबरबादी।।

8. अनपढ़ से न करती बात,
रखती सीने अपने ज्ञान।
पायी जाती सभी जगह,
साक्षर मेरा करते गुणगान।।

9. आगे कटूँ तो बनता थोड़ा,
आगे काट उल्टा करे तीर।
धन–धान्य देती मैं खूब,
जब देते मेरा सीना चीर।।

10. देवनागरी है लिपि,
कहलाती सुरभाषा।
हिन्दी की लगती नानी,
न समझे वो अज्ञानी।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

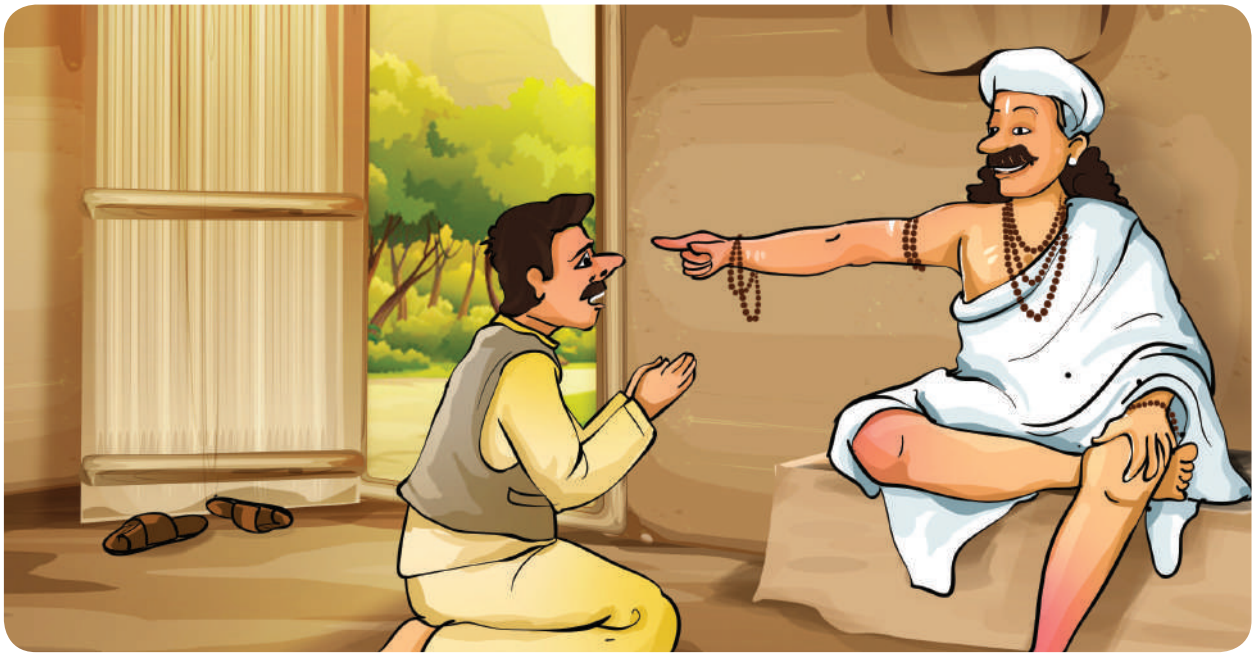

क्रोध न करें

– गुलशन कुमारी

एक गाँव के मठ में एक साधु रहते थे। लोग उनके पास सत्संग के लिए पहुँचते रहते थे। वह एक ही बात पर ज्यादा जोर देते थे कि क्रोध मत करो। उनके पास हर समस्या का समाधान यही था कि क्रोध मत करो। उनकी सीख के बावजूद गाँव के लोग बात–बात पर झगड़ते रहते थे।

एक बार एक सज्जन उस गाँव में आए। उनको साधु के बारे में पता चला तो वह भी साधु से मिलने मठ में चले गये। सज्जन आम भक्तों की भीड़ में ही बैठे रहे। उन्होंने अपना परिचय भी नहीं दिया। एक आम भक्त की तरह उन्होंने उनसे अनुरोध किया कि जीवन में प्रसन्न रहने के लिए क्या करना चाहिए?

साधु ने कहा, "अगर प्रसन्न रहना चाहते हो तो किसी पर कभी क्रोध मत करना।"

उन्होंने कहा, मुझे अच्छी तरह सुनाई नहीं दिया। साधु ने थोड़ा जोर से कहा, क्रोध मत करना।

उन्होंने फिर कहा, जरा अच्छी तरह समझाइए, क्या करना चाहिए?

साधु ने क्रोधपूर्ण लहजे में कहा, "अरे मूर्ख, क्रोध मत करना, गुस्सा मत करना।" सज्जन ने कहा, मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। इसलिए एक बार फिर बता दीजिए। इस बार साधु ने पास रखा डंडा उठाकर उस सज्जन के सिर पर दे मारा। अब सज्जन ने साधु से पूछ लिया अगर क्रोध न करना ही जीवन में प्रसन्न रहने का मंत्र है तो आपने मुझ पर क्रोध क्यों किया?

अब साधु बहुत लज्जित हुए और उस सज्जन से क्षमा याचना की।

तब उस सज्जन ने कहा कि एक हिंसक व्यक्ति दूसरों को क्रोध न करने की शिक्षा कैसे दे सकता है? यह जरूरी है पहले हम स्वयं क्रोध से मुक्त होने का प्रयास करें। क्रोध व्यक्ति के बल को क्षीण कर देता है। दिमाग की नाड़ियों पर बुरा असर डालता है। इन्सान काम करने की क्षमता खो देता है।

क्रोध से बचने का एकमात्र रास्ता है कि समय के सत्गुरु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करके सेवा, सुमिरण और सत्संग के मार्ग पर प्राणी अग्रसर रहे। ❖

हर हल ईश्वर के पास

– राधा नाचीज

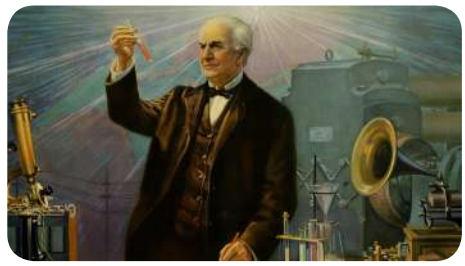

थॉमस एडिसन फोनोग्राफ बनाने के काम में व्यस्त थे। इसी बीच भारी–हल्के स्वरों से सम्बन्धित मशीन से निकलने वाली एक समस्या उनके सामने खड़ी हो गई। उन्होंने यह गुत्थी सुलझाने का काम अपने एक सहायक के सुपुर्द कर दिया।

दो साल तक उस पर काम करने के बाद वह सहायक एडिसन के पास आया और बोला– मिस्टर एडिसन, मैंने आपके हजारों डॉलर और अपने जीवन के दो साल इस काम में खपा दिए और निकला कुछ नहीं। अगर कोई और होता तो मुझे अब तक निकाल देता। मैं इस्तीफा देना चाहता हूँ। इतना कहकर उसने इस्तीफे की दरखास्त एडिसन की मेज पर रख दी और विनम्रता से बोला– कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार कीजिए। एडिसन ने एक क्षण भी सोचे बगैर इस्तीफे का कागज फाड़ दिया और बोले– मैं तुम्हारा इस्तीफा नामंजूर करता हूँ।

क्षणभर रूककर एडिसन ने कहा– जॉर्ज, मेरा विश्वास है कि हर समस्या, जो ईश्वर ने हमें दी है उसका हल उसके पास है। हम भले ही उसे न निकाल सकें, मगर किसी न किसी दिन कोई न कोई उसे जरूर निकालेगा। वापस जाओ और कुछ अर्से तक और मेहनत करो। ❖

चींटीखोर जिसे चींटियाँ खाना पसन्द है

– ऋषिमोहन श्रीवास्तव

चींटीखोर नाम का यह जीव चींटियों को बड़े चाव से खाता है। इसे 'एकिडना' भी कहते हैं। यह अपनी लम्बी चोंच चींटियों के बिल में डालकर उन्हें निकाल लेता है। चींटियाँ इस जीव से बचना चाहती हैं किन्तु बच नहीं पातीं। विशेषकर जंगली चींटियों के लिए इससे ज्यादा खतरा बना रहता है।

चींटीखोर की जीभ पर बहुत ही चिपचिपा पदार्थ लगा रहता है जिससे तुरन्त ही चींटियाँ उससे चिपक जाती हैं।

आमतौर पर चींटीखोर की त्वचा नुकीले काँटों से ढकी रहती है। इसके ठीक नीचे साधारण बालों की एक परत होती है। शरीर का अगला भाग लम्बा और शुंडाकार होता है। पैरों में पाँच–पाँच उंगलियाँ पाई जाती हैं तथा एड़ी पर एक छोटा–सा कट होता है जो एक विशेष ग्रंथि से जुड़ा रहता है।

एक विचित्र बात चींटीखोर में होती है– इसकी आँखें बहुत छोटी होती हैं। कान होते जरूर हैं किन्तु उन कानों से यह सुन नहीं पाता। सुनने की क्षमता इसके अंतःकर्णों में पाई जाती है। चींटीखोर के पैरों के नाखून बहुत मजबूत और नुकीले होते हैं। इनकी मदद से ही चींटीखोर चींटियों के टीले और दीमक के घोंसले फोड़ने में कामयाब होते हैं।

आमतौर पर चींटीखोर रात्रि के समय अपनी मांद से बाहर निकलता है। यह जीव मुख्यतः ऑस्ट्रेलिया, गुआना, तस्मानिया में विशेष रूप से पाया जाता है। ❖

सूरज देता है संदेश

– शैलेन्द्र कुमार

रोज सुबह, जब आता सूरज,
अंधकार छुप जाता है।

भेद नहीं, करता है सूरज,
सबको किरणें, देता है।

खुद जल–जल, परहित कर जाता,
कीमत कुछ, नहीं पाता है।

यदि बनना, चाहो तुम सूरज,
मेहनत से, हर काम करो।

जिन राहों में, अंधकार हो,
मेहनत से, रोशन कर दो।

सूरज से खुद चमको,
और सबको तुम चमकाओ।

चिड़िया

– प्रदुमन पासवान

चीं... चीं... करती आयी चिड़िया,
मीठे गीत सुनाती चिड़िया।
मम्मी–पापा को भी भाती,
रंग–बिरंगें परों वाली चिड़िया।।

गोलू, छोटू, मोटू आओ,
चावल के कुछ दाने लाओ।
डाली पर बैठी कितनी चिड़िया,
चीं...चीं...चीं... करती आई चिड़िया।।

चावल का एक–एक दाना,
मिल–जुलकर आज खिलाना।
देखो कोई छूट न जाएं,
भोलू, बबलू को भी लाना।।

लालच का फल

– गोपाल जी गुप्त

किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। उसके मकान के ऊपरी हिस्से में, रसोईघर में बने एक मोखे (रोशनदान) में, जो दोनों तरफ से खुला था, एक कबूतर रहता था। कबूतर रोज सुबह दाना चुगने निकल जाता, दिनभर दाना–चुग्गा चुगता और शाम को वापस आ उसी मोखे में आराम करता।

एक दिन एक कौआ उड़कर आया और छत की मुंडेर पर बैठ गया। रसोई में मछली पकाई जा रही थी जिसकी गंध उसे लगी तो उसका मन मचल उठा। वह दिन भर छत पर ही चक्कर लगाता रहा पर उसे मछली चखने का मौका नहीं मिला। शाम हो रही थी तथा उसने देखा कि एक कबूतर आया और वह रसोई के मोखे में घुस गया। कौआ जान गया कि कबूतर वहीं रहता है। उसने कबूतर के जरिए ही मछली चखने की योजना बनाई।

दूसरे दिन कौआ सुबह–सबेरे ही वहाँ आ गया और कबूतर के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में कबूतर निकला और चुग्गे की तलाश में उड़ चला। कौआ भी उसी के पीछे–पीछे उड़ने लगा। यह देख कबूतर ने उससे पूछा कि वह उसके पीछे क्यों उड़ रहा है?

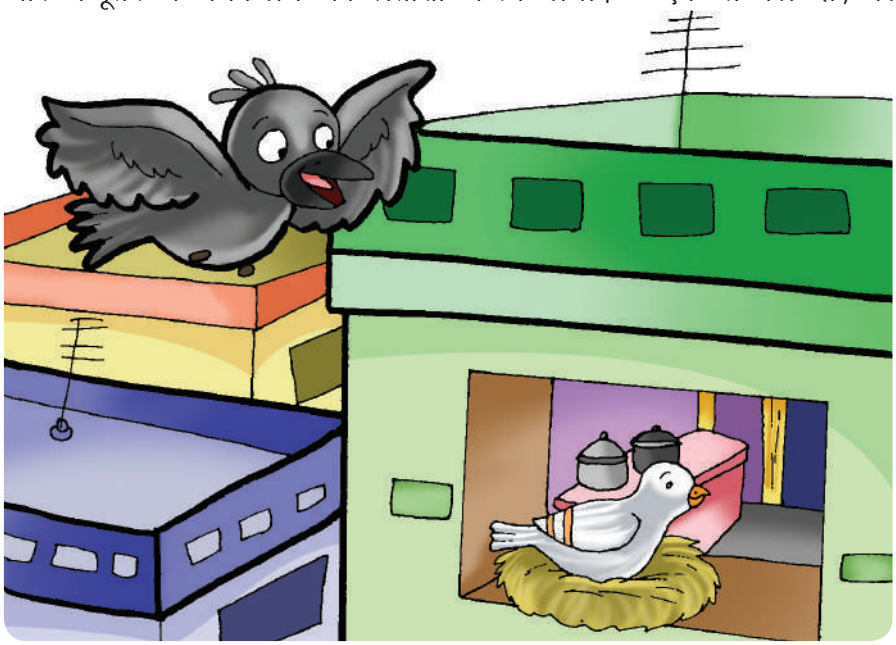

चालाक कौए ने अपने स्वर को भरसक मीठा बनाते हुए कहा कि वह उसे (कबूतर को) अपना मित्र बनाना चाहता है, वह दूसरे नगर से आया है और वहाँ उसका कोई मित्र नहीं है। वह यह भी चाहता है कि दोनों साथ–साथ चुग्गा चुगने जाएँ और साथ–साथ रहें।

इस पर कबूतर ने कहा कि चूंकि उन दोनों की जाति अलग–अलग है, उनके चुग्गे अलग–अलग हैं फिर वे एक साथ कैसे चुग्गे चुग सकते हैं तथा साथ रह सकते हैं?

यह सुनकर कौए ने कहा कि वह उसके साथ ही रोजाना जायेगा तथा लौटेगा, क्योंकि कहा गया है कि 'एक से भले दो', भले ही उनके चुग्गे अलग–अलग हैं, वे चुग्गे अलग–अलग चुगेंगे और लौटेंगे एक साथ। कबूतर उसकी चालाकी भांप नहीं पाया और उसे दूसरे नगर से आया जान उसकी बात मान ली और शाम को दोनों साथ–साथ लौटे तथा कौए ने भी उसी मोखे में अपना डेरा जमा लिया।

एक सप्ताह बाद शाम को कौए ने देखा कि रसोइया उस दिन भी मछली लाया है तथा सुबह पकाने के लिए

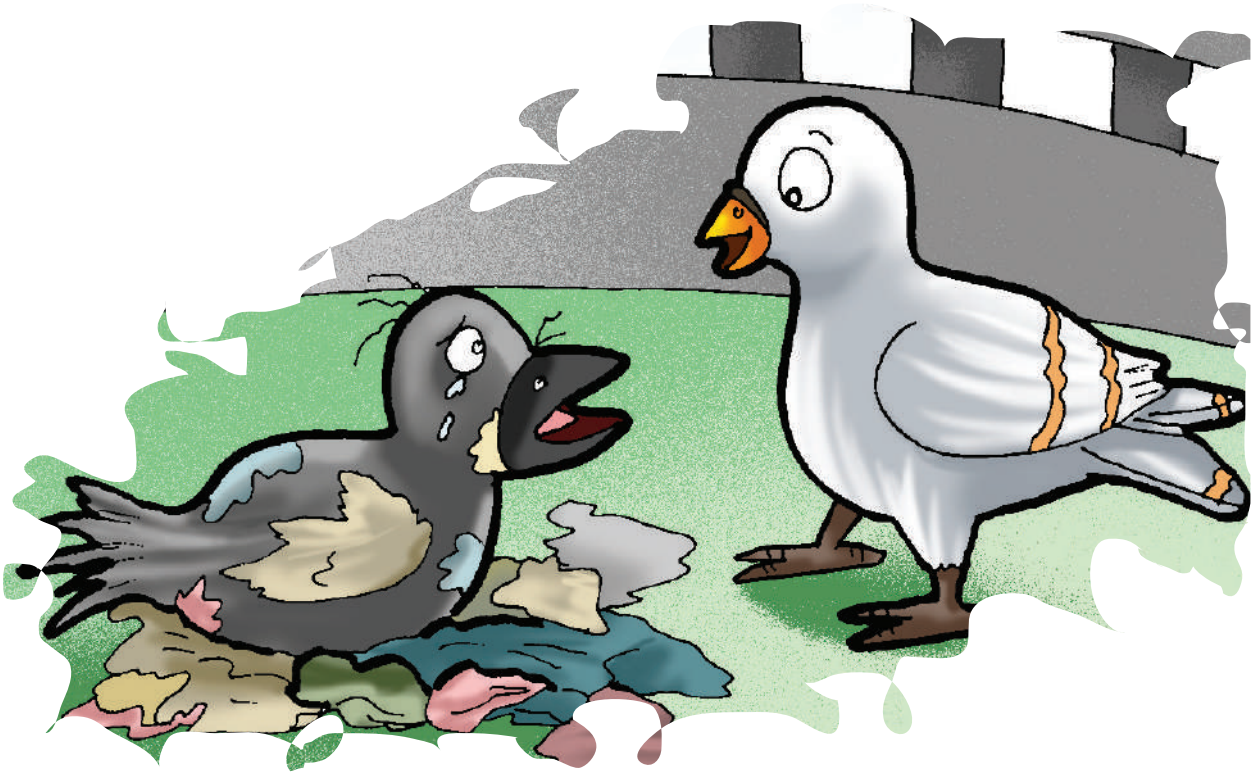

रख दिया है। उस रात कौआ बड़ा बेचैन रहा। अगली सुबह जब कबूतर ने उससे चलने को कहा तो उसने बहाना बना दिया कि उसके पंख में कल चोट लग गयी थी। आज वहाँ दर्द है इसलिए आज वह वहीं रहेगा इसलिए कबूतर अकेले चला जाए। उसकी बात सुन कबूतर उसकी चालाकी भांप गया पर उसने प्रकट नहीं किया, बल्कि जाते–जाते यह और कहता गया कि वह भूलकर भी रसोई में रखी कोई चीज न खाये वरना हो सकता है उसे तकलीफ उठानी पड़े।

कौए ने उसे ऐसा न करने का आश्वासन दिया और कबूतर के जाने के बाद खुश हो गया क्योंकि आज उसकी इच्छा पूरी होने जा रही थी।

थोड़ी देर बाद ही रसोइए ने मछली साफ की और व्यंजन तैयार करने के लिए चूल्हे पर पतीली चढ़ा दी। मोखे में बैठा कौआ लालची नज़र से उसे देख रहा था। मछली को पकाने के लिए रसोईए ने पतीली में उसके टुकड़े डाले और भण्डारघर से मसाला लेने गया। रसोई खाली देख कौआ मोखे से बाहर निकला उसने पतीली में चोंच मारा पर पतीली लुढ़क गयी, उसमें से शोरबा कौए पर गिरा, गर्म शोरबे से कौआ तड़प उठा उधर पतीली गिरने की आवाज सुन रसोईया भागकर आया। कौआ उड़ नहीं पाया था, इसलिए उसने कौए को पकड़ लिया फिर उसके पंख नोच उसे बाहर फेंक दिया। पंख नुच जाने तथा वहाँ गर्म एवं नमकीन शोरबे की जलन से कौआ बेहाल हो गया था।

शाम को लौटने पर कबूतर ने उसकी दुर्दशा देखी और उसके पास आया और बोला, ''मैंने तुमसे सुबह मना भी किया था कि रसोई में न जाना पर तुम नहीं माने आखिर तुम्हें लालच करने का फल मिल ही गया, अब भुगतो।'' कबूतर उसे उसके हाल पर छोड़कर अपने मोखे में चला गया। रात में कष्ट भोगता हुआ भूखा प्यासा कौआ मृत्यु को प्राप्त हो गया। ❖

वैज्ञानिक प्रश्नोत्तरी

– विभा वर्मा

प्रश्न : पृथ्वी के सबसे नजदीकी तारे का नाम क्या है?

उत्तर : पृथ्वी का सबसे नजदीकी तारा 'प्रोक्सिमा सैंटोरी' है। जो 4.33 प्रकाशवर्ष दूर है। यह तारा दक्षिण ी गोलार्द्ध के देशों में ही देखा जा सकता है। जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में दिखाई पड़ने वाला सबसे पास का तारा 'सिरियस' है जो 8 प्रकाशवर्ष दूर है।

प्रश्न : पृथ्वी के सबसे नजदीकी तारे का नाम क्या है?

उत्तर : पृथ्वी का सबसे नजदीकी तारा 'प्रोक्सिमा सैंटोरी' है। जो 4.33 प्रकाशवर्ष दूर है। यह तारा दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में ही देखा जा सकता है। जबकि उत्तरी गोलार्द्ध में दिखाई पड़ने वाला सबसे पास का तारा 'सिरियस' है जो 8 प्रकाशवर्ष दूर है।

प्रश्न : दूध कब दही बन जाता है?

उत्तर : दूध के जमने और फटने की क्रियाएँ वास्तव में बैक्टीरिया के कारण होती हैं। बैक्टीरिया एककोशिय जीवाणु है। ये आकार में इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें हम नंगी आँखों से नहीं देख पाते हैं और ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि एक सुई की नोक पर हजारों की संख्या में जीवाणु हो सकते हैं। दूध में यदि लैक्टोवैसीलियस या स्टेफैलोकोकस नामक जीवाणु मिल जाएं जो दही में मौजूद होते हैं तो वह अपनी संख्या में बढ़ोत्तरी करना आरम्भ कर देते हैं और सारे दूध को दही में बदल देते हैं।

प्लास्टिक के प्रयोग से पहले सोचो

बच्चो ! जिस प्लास्टिक को विज्ञान ने वरदान के रूप में आंका था, वह अब अभिशाप के रूप में हम लोगों के सामने आ रहा है क्योंकि प्लास्टिक की थैलियाँ अथवा अन्य वस्तुओं का प्लास्टिक टुकड़ों के रूप में वर्षा के माध्यम से बहकर वह जल को दूषित करता है और वह निकासी व्यवस्था को भी अवरुद्ध करता है। यह वनस्पति जगत को नष्ट करने का एक बहुत बड़ा कारण भी है क्योंकि यह जहाँ गिरता है उसके नीचे घास–पात भी नहीं उग पाता है।

इस तरह से प्रकृति का एक बहुत बड़ा हिस्सा छोटे–छोटे टुकड़ों में बंजर बनता जा रहा है। कई बार हम बचा हुआ भोजन इसमें रखकर बाहर फेंक देते हैं जिन्हें जानवर भोजन के साथ इसे भी खा जाते हैं जो उनकी मृत्यु का कारण भी बनता है।

अतः बच्चो, हमें बाजार जाते समय कपड़े से बने झोले लेकर जाना न भूलें। साथ ही दुकानदार से भी कहें कि हमें कागज के ही बने थैले में सामान पैक कर के दें। अपने साथियों, दोस्तों, मित्रों, परिवारों एवं समाज से शुरू करके, हम इस पर विस्तार से चर्चा करके तथा सावधानी रखकर राष्ट्रीय श्रम, समय, ऊर्जा तथा आर्थिक बचत भी बढ़ा सकते हैं। ऐसी वस्तुएँ, जो एक बार में ही उपयोग के बाद बेकार हो जाने वाले डिस्पोजेबल प्रोडक्ट भी जैसे– पेन, रेजर, पेय पदार्थों के मेटेलिक केन आदि का बहिष्कार कर पुनः उपयोगी वस्तुएँ ही खरीदें। ❖

परिश्रम

– शिवचरण मंत्री

मराठी सन्त प्रवर तुकाराम जी के पास एक गरीब व्यक्ति बार–बार आता और उनसे धनवान होने का आशीर्वाद देने का निवेदन करता, वह गिड़गिड़ाता, विनती करता पर सन्त तुकाराम जी उसे एक या दूसरे कारण से टालते रहते थे।

एक दिन की बात। सुबह का समय था। सूर्य अपनी किरणें फैला रहा था। सन्त प्रवर तुकाराम जी अपनी कुटिया में बैठे थे। उन्होंने दूर से जाते एक आदमी को देखा। जाते हुए आदमी के सिर पर एक टोकरी थी और वह जोर–जोर से पुकार रहा था। आम ले लो। मीठे, ताजे, सस्ते आम ...।

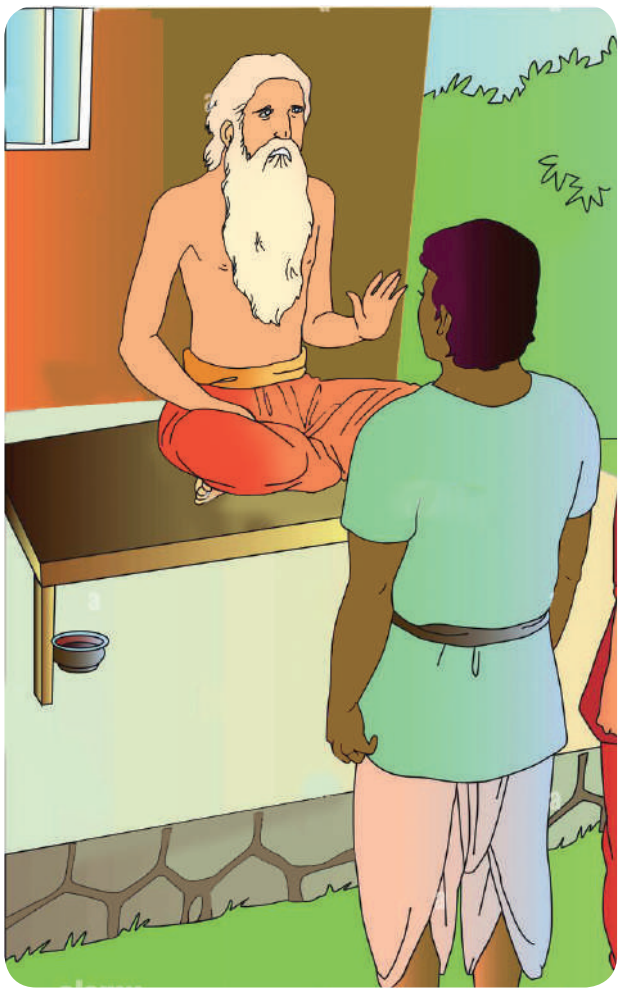

सन्त ने आवाज से पहचान लिया कि आम बेचने वाला वही आलसी व्यक्ति है जो उनको बार–बार धनी होने का आशीर्वाद देने का आग्रह करता रहा है। वे तुरन्त आम बेचने वाले व्यक्ति की ओर नंगे पाँव दौड़े और चिल्लाए; अरे रूको। मुझे ...।

आम बेचने वाले ने पीछे मुड़कर देखा। सन्त प्रवर को अपनी ओर आते देखकर आम वाला रूका। सन्त जल्दी से आमवाले के पास पहुँचे और आमवाले को आशीर्वाद देते हुए बोले, "वत्स लक्ष्मीवान बनो। तुम्हारे पास अथाह सम्पति हो ...।"

आज, आप मुझे अथाह सम्पति का आशीर्वाद दे रहे हैं। जबकि इससे पहले मैंने आपसे कई बार प्रार्थना की पर आपने ऐसा आशीर्वाद नहीं दिया, पर आज आप बिना माँगे ही...।

सन्त ने आमवाले की बात को बीच में काटते हुए कहा, "वत्स! तू गरीब तो था, तुझे लक्ष्मी की जरूरत भी थी, पर तू आलसी था। मेहनत से जी चुराता था। लक्ष्मी, पैसा आलसी व्यक्ति के पास नहीं हो सकता है। धनवान बनने के लिए परिश्रम करना जरूरी है। आज तू परिश्रमी बन गया। मेहनती बन गया। अतः मैंने अपनी वाणी सच करने को धनवान बनने का आशीर्वाद दे दिया। इतना कहकर सन्त अपनी कुटिया की लौट पड़े।

आम बेचने वाला यह देख दंग रह गया और भविष्य में सन्त प्रवर की बात मानकर मेहनत करने लगा।

संसार में धन ही नहीं अपितु हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने को परिश्रमी होना जरूरी है। ❖

धोने हाथ जरूरी

–इन्द्र मल्होत्रा

चाहे खाओ रोटी बच्चो,
चाहे हलवा पूरी।
खाने से पहले हैं,
धोने हाथ जरूरी।।

तुमने भी खाने हो छोले,
या खानी हो पूरी।
खाने से पहले हैं,
धोने हाथ जरूरी।।

ऐसा करने से रहोगे,
आप सदैव निरोग।
कहते इस अनमोल कथन को,
सारे डॉक्टर लोग।।

सभी साथियों में बच्चो तुम,
कर दो खूब मशहूरी।
खाने से पहले हैं,
धोने हाथ जरूरी।।

हमारे आस-पास

– कमलसिंह चौहान

आसमान में खिलते तारे,
धरती पर हैं बच्चे प्यारे।
तारे पहुँच से दूर हैं देखा,
आस पास हैं बच्चे सारे।।

चंदा भी तो चमक दिखाता,
सदा चाँदनी है फैलाता।
इससे सीखो प्रेम बाँटना,
सचमुच में ये कितने न्यारे।।

सूरज भी आता जाता है,
धरती संग गहरा नाता है।
सब तक गर्मी पहुँचाता है,
कुदरत के हैं सुन्दर नजारे।।

पानी बहता वायु चलती,
सारी दुनिया इन पर पलती।
इनसे सीखो सबसे मिलना,
बन जाओगे राजदुलारे।।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

आओ चिंटू नाश्ता कर लो।
हैलो दोस्तों, कैसे हो?
अरे वाह! आंटी आपने तो विभिन्न प्रकार के फूड बनाए हैं। एनर्जी गिविंग फूड, बॉडी बिल्डिंग फूड और प्रोटेक्टिव फूड।
अच्छा इनमें से कौन–सा फूड किस कैटेगिरी का है?
देखो किट्टी ये जूस और ब्रेड तो हैं एनर्जी–गिविंग फूड।
दूध है बॉडी–बिल्डिंग फूड और फल और सब्जियाँ हैं प्रोटेक्टिव फूड।

मॉम और कौन–कौन से फूड किसलिए होते हैं? बताओ न।

चलो ड्राइंग रूम में वहाँ प्रोजेक्टर पर दिखाती हूँ।

विभिन्न प्रकार के फूड्स।

बॉडी बिल्डिंग फूड से हमारे मसल्स अच्छे होते हैं और बॉडी बनती है।

कौन एनर्जी गिविंग फूड के फायदे बताएगा?

मॉम! इन सभी फूड्स को खाने से हमारे शरीर में एनर्जी रहती है। हम एक्टिव रहते हैं।

आंटी! प्रोटेक्टिव फूड खाने से हमारे शरीर में विटामिन्स की कमी दूर होती है।
विभिन्न प्रकार के फूड्
Milk
हाँ किट्टी और हमें जंक फूड्स बहुत कम खाने चाहिएं।
मॉम! अब मैं सभी प्रकार के हेल्दी फूड्स खाऊँगी और अपनी सेहत अच्छी बनाऊँगी।
किट्टी, अब हम सभी हेल्दी फूड्स खाएँगे।
बाय किट्टी।

पढ़ो और हँसो

एक चलती ट्रेन में टी.सी. ने एक यात्री से टिकिट की माँग की। यात्री ने जेब से टिकिट निकालकर टी.सी. को दे दी।

टी.सी. टिकिट देखकर बोला– यह तो प्लेटफार्म टिकिट है।

यात्री ने जवाब दिया– मुझे प्लेटफार्म पर ही उतरना है।

सूरज : पिता जी हिमालय कहाँ है?

पिताजी : बेटा, अपनी मम्मी से पूछो, वह सारी चीजें सम्भालकर रखती हैं।

एक कुत्ता : चल दोस्त आज फिल्म देखने चलते हैं।

दूसरा कुत्ता : नहीं दोस्त, मैं फिल्म देखने नहीं जा सकता, कल मैंने अपने कानों से सिनेमा हाल के अन्दर से आती आवाज सुनी है कि कुत्ते, मैं तेरा खून पी जाऊँगा। ऐसे में हमारा फिल्म देखना खतरे से खाली नहीं।

डॉक्टर : (पांच वर्षीय बच्चे से)– बेटे यह दिन में चार चम्मच रोज लेना।

बच्चा : (डॉक्टर से) लेकिन डॉक्टर अंकल, मेरे घर में तो सिर्फ दो ही चम्मच हैं।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बडनेरा)

गृहिणी ने कहा– रामू आज तुमने बहुत कीमती फूलदान तोड़ दिया। आज के बाद ऐसी गलती की तो मार–मारकर सिर गंजा कर दूँगी। समझे?

– जी समझ गया।

– क्या समझे?

– यही कि मालिक भी किसी ऐसी गलती का अंजाम भुगत रहे हैं।

– मुझे लखपति बनाने का सारा श्रेय मेरी पत्नी को है।

– अच्छा आप पहले क्या थे?

– करोड़पति।

दो गप्पी आपस में –

एक गप्पी : (दूसरे गप्पी से) जब मेरे दादाजी मरे तो वह लाखों रुपये छोड़ गये।

दूसरा गप्पी : अरे यह तो कुछ भी नहीं, जब मेरे दादा जी मरे तो वह पूरी दुनिया छोड़ गये।

एक दोस्त : (दूसरे दोस्त से)– ''तुम्हें पता है, मैं बड़ों–बड़ों को पानी पीला चुका हूँ।''

दूसरा दोस्त : अच्छा, तो तुम जरूर किसी बड़े होटल में काम करते होंगे।

– सुरेश खुराना (जीन्द)

एक भिखारी : बाबा, कुछ दे दो.... बहुत भूखा हूँ।

रामू : सौ रुपये दिखाते हुए बोला– 50 रुपये हैं तुम्हारे पास।

खुशी से उछलता हुआ भिखारी बोला– जी हाँ हैं।

रामू : तो पहले वो तो खर्च कर लो, फिर आना।

डॉक्टर : (रामू से) कमजोरी है फल खाया करो, छिलके सहित।

(एक घंटे बाद)

रामू : डॉक्टर साहब, मेरे पेट में दर्द हो रहा है।

डॉक्टर : क्या खाया था?

रामू : अन्नानास छिलके सहित।

निष्ठा : (मेहमान से) जब मैं दो साल की थी तो छत से गिर गई थी?

मेहमान : फिर क्या तुम बच गई थी?

निष्ठा : पता नहीं, उस समय मैं बहुत छोटी थी।

इंजीनियरिंग का फार्म भरते हुए छात्र ने पास खड़े चौकीदार से पूछा– कैसा है यह कालेज?

चौकीदार : बहुत बढ़िया है हमने भी यहीं से इंजीनियरिंग की है।

एक सीधा–सादा देहाती थाने पहुँचा और थानेदार से बोला– 'जनाब, मेरे घर में एक चोर है, उसे पकड़ लें।

थानेदार : तुम उसे किसकी निगरानी में छोड़कर आए हो।

देहाती : सर, किसी की भी नहीं, मैं उसके पाँव रस्सी से बाँधकर आया हूँ।

थानेदार : पर उसके हाथ तो खुले हैं, वह पाँव का रस्सी खोलकर भाग जाएगा।

देहाती : जनाब, जब यह आइडिया मेरे दिमाग में नहीं आया तो उसके दिमाग में कैसे आएगा?

सड़क के किनारे एक भिखारी दोनों हाथों में एक–एक कटोरा लेकर भीख मांग रहा था।

एक आदमी ने एक कटोरे में एक रुपया डाला और पूछा– यह दूसरा कटोरा किसलिए?

भिखारी : जी, कारोबार फैलाने के लिए मैंने नई ब्राँच खोल ली है।

पप्पू : पिता जी, कल आपको स्कूल आना पड़ेगा। एक 'छोटी–सी 'पैरेंट मीटिंग' के लिए।

पिता जी : 'छोटी–सी पैरेंट मीटिंग' क्या मतलब?

पप्पू : इस मीटिंग में केवल मैं, आप और प्रिंसिपल साहब होंगे।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

आजीवन झुण्ड में रहने वाला पक्षी सतभाई

–परशुराम शुक्ल

सतभाई मैना के आकार का एक मटमैले भूरे रंग का पक्षी है। यह हमेशा छः या सात या इससे भी अधिक के झुण्ड में रहता है। इसलिए इसे सतभाई कहते हैं। इसे झुण्ड के मध्य रहना अधिक प्रिय होता है।

सतभाई की पीठ का रंग गहरा भूरा तथा पेट का भाग हल्का पीलापन लिए हुए होता है। इसके शरीर का सर्वाधिक विलक्षण भाग है– इसकी दुम। सतभाई की दुम काफी लम्बी होती है तथा देखने पर ऐसा लगता है मानो अलग से लगा दी गई हो। नर तथा मादा सतभाई की शरीर संरचना तथा रंग–रूप एक जैसा होता है। अतः दूर से देखने पर दोनों में अन्तर करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

सतभाई भारत में सभी स्थानों पर पाया जाता है। यह हिमालय पर्वत की पाँच हजार फुट की ऊँचाई वाले स्थानों पर भी देखने को मिल जाता है। इसकी कुछ प्रजातियाँ बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा श्रीलंका में भी पाई जाती हैं। सतभाई खुले जंगलों तथा गाँव और शहर के निकट बाग–बगीचों के वृक्षों पर रहना अधिक पसन्द करता है। यह वृक्षों पर या जमीन पर भोजन खोजते समय आपस में एक–दूसरे के साथ मिलकर लगातार विशेष ढंग से चहचहाता रहता है। कभी–कभी इसकी यह चहचहाहट इस प्रकार की होती है। मानो दो पक्षी आपस में लड़ रहे हों।

सतभाई का प्रमुख भोजन तिलचट्टा, मकड़ी, टिड्डे, लारवे और इसी प्रकार के कीड़े–मकोड़े तथा विभिन्न प्रकार की जंगली बेरियाँ व फूलों का रस है। यह अपने झुण्ड के साथ जमीन पर पड़ी हुई पत्तियों के मध्य कीड़े–मकोड़े की तलाश करता हुआ अक्सर देखा जा सकता है। कभी–कभी इसके झुण्ड के साथ अन्य पक्षी भी आकर मिल जाते हैं। यह सामान्य पक्षियों को तो अपने झुण्ड में सम्मिलित कर लेता है किन्तु शिकारी बाज, चील या बिल्ली आदि के आने पर उनका डटकर मुकाबला करता है।

समय से

—मीरा सिंह 'मीरा'

सुबह होने से पहले,
बिस्तर जो छोड़ देते हैं।
उन बच्चों के कदमों में,
दुनिया के सुख होते हैं।।

सूरज उगने से पहले,
जो बच्चे उठ जाते हैं।
रहते सदा निरोग तन से,
कक्षा में अव्वल आते हैं।।

जीवन के हर दौड़ में,
सबसे आगे नजर आते हैं।
सुख समृद्धि ऐश्वर्य,
उनके दास बन जाते हैं।।

समय से जो सोते हैं,
और समय से जागते हैं।
वो अपनी तकदीर खुद,
स्वर्णाक्षरों से लिखते हैं।।

माँ सुन रही हो न

माँ, मेरी बात सुन रही हो न
माँ मुझे तुम गुन रही हो न ...

नहीं चाहिए गुड्डे गुड़िया,
नहीं चाहिए कंगन चुड़ियाँ।
बड़ी हो गयी तुम्हारी मुनिया,
माँ मेरी बात सुन रही हो न ...

विद्यालय पढ़ने जाऊँगी,
पढ़ लिखकर ज्ञान पाऊँगी।
मुझे कमतर नहीं समझे दुनिया,
माँ मेरी बात सुन रही हो न ...

मेरे कन्धे पर हाथ धर दो,
रगों में उल्लास भर दो।
तेरा नाम करेगी रोशन मुनिया,
माँ तुम मुझे सुन रही हो न ...

कहानी

होली पर सीख

–ललित शौर्य

नंदनवन में होली की धूम मची हुई थी। चारों ओर होली के गीत सुनाई दे रहे थे। सभी जानवर होली की मस्ती में डोलते नज़र आ रहे थे। पूरा नंदनवन गुजिया और पापड़ की खुशबू से महक रहा था।

लल्लू लोमड़, बिल्लू बुलबुल, चीकू चूहा, खन्नू खरगोश भी खूब मस्ती कर रहे थे। सभी ने इस बार होली से पहले शॉपिंग करने की योजना बनाई। वे सब शहर जाकर होली का सामान खरीदने की तैयारी में जुट गए।

अगले दिन सुबह, वे चारों ऑटो में बैठकर शहर की ओर जाने लगे। शहर पहुँचकर शहर की रौनक देख वे सब दंग रह गए। पूरा शहर होली के रंग में शराबोर था।

लल्लू बोला, "अरे, वाह शहर कितना सुन्दर लग रहा है। यहाँ तो खूब सारी दुकाने हैं।"

लल्लू की बात को आगे बढ़ाते हुए बिल्लू बोला, "दुकानों में ढेर सारा रंग और पिचकारियाँ हैं। मैं तो खूब सारे रंग खरीदूँगा।"

"अरे, देखो जरा यहाँ जो गुब्बारे भी लटक रहे हैं। शायद पिछले साल की होली में नीकू नेवला शहर से ही गुब्बारे खरीदकर लाया होगा। उसने गुब्बारों में पानी भरकर हम सबको खूब भिगोया। इस बार हम उसे मजा चखाएँगे।" चीकू ने उचकते हुए कहा।

"वाह देखो, यहाँ तो इन्द्रधनुष से भी ज्यादा रंग बिखरे पड़े हैं। लाल, हरा, नीला, पीला, नारंगी सारे रंग। इतने रंग तो हमारे जंगल में भी नहीं दिखाई देते।" रंग–बिरंगे गुलाल के ढेरों को देखकर, उछलते हुए खन्नू खरगोश बोल पड़ा।

चारों दोस्त दिनभर शहर घूमते रहे। उन्होंने खूब सारी खरीददारी की। होली वाले गुब्बारे, ढेर सारा गुलाल, बड़ी–बड़ी पिचकारियाँ और रंग–बिरंगे मुखौटे खरीदे। शाम होने से पहले ही उन लोगों ने जंगल का ऑटो पकड़ लिया और अँधेरा होने तक नंदनवन पहुँच गए।

अगले दिन वे सब होली खेलने को खुले मैदान में जुट गए। शहर से लाए रंगों को एक–दूसरे पर मलने लगे।

चारों दोस्तों ने लम्बू जिराफ को रंगने की योजना बनाई। पर वह बहुत ऊँचा था। कौन उसे रंग लगा पाता, कौन उसे भिगोता। चारों दोस्त दो–दो भागों में बँट गए। योजना के अनुसार लल्लू और चीकू जमीन से लम्बू पर गुब्बारे से वार करेंगे और बिल्लू और खन्नू पेड़ पर चढ़कर उसके ऊपर रंग डालेंगे।

वे चारों अपनी योजना में सफल हुए। लम्बू बुरी तरह से भीग चुका था लेकिन गुब्बारे से उसकी आँख में हल्की–सी चोट आ गई।

लम्बू को बहुत गुस्सा आया। वे कुछ कर पाता तब तक चारों वहाँ से भाग चुके थे।

रास्ते में उन सबको नीकू मिल गया, उसे भी उन्होंने जमकर भिगोया। उस पर खूब गुब्बारे बरसाये। गुब्बारों की चोट से नीकू की हालत खराब हो गई।

चीकू, खन्नू, लल्लू और बिल्लू ने एक–दूसरे को भी खूब रंग लगाया।

शाम हो चुकी थी। सभी अपने–अपने घर चले गए।

अगली सुबह सभी की आँखों और चेहरों में भयंकर जलन हो रही थी। सभी की त्वचा झुलस–सी गई थी। चीकू, खन्नू, लल्लू और बिल्लू भी बहुत परेशान थे।

जंगल के सभी जानवर जिन्हें इन चारों ने रंगा था वे भी इसी परेशानी से जूझ रहे थे।

उधर चारों दोस्तों के हुडदंग की खबर जंगल के राजा शेरू सिंह तक पहुँच गई। शेरू को ये सब सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने उन चारों को अपने पास बुलवाया।

''तुम चारों ने होली के त्योहार को मजाक बनाकर रख दिया है। तुम लोग अपनी सेहत से तो खिलवाड़ कर ही रहे हो, साथ में दूसरों को भी मुसीबत में डाल रहे हो। तुम लोगों को इतना भी नहीं मालूम कि सस्ता और रासायनिक रंग चेहरे के लिए कितने खतरनाक हो सकते हैं। इसमें सीसा और अन्य घातक कैमिकल मिले होते हैं। जिनके आँखों में चले जाने से आँखों की रोशनी भी जा सकती है।'' शेरू ने दहाड़ते हुए गुस्से में कहा।

वे चारों सिर झुकाकर सब सुन रहे थे।

शेरू ने आगे कहा, ''होली में पानी भरे गुब्बारों का उपयोग भी ठीक नहीं। तुम्हें पता है तुम्हारे गुब्बारे की चोट से लम्बू की आँख सूज गई है। होली खेलने के लिए सिर्फ हर्बल गुलाल और हर्बल रंगो का प्रयोग करना चाहिए। होली मस्ती और सौहार्द का त्योहार है। इसे इसी भाव के साथ मनाना चाहिए। आगे से ध्यान रखना ऐसी गलती नहीं होनी चाहिए।''

चारों ने शेरू से वादा किया कि वे अब रासायनिक रंगों का बिल्कुल भी प्रयोग नहीं करेंगे और न ही पानी के गुब्बारों से होली खेलेंगे। अब वे सिर्फ हर्बल गुलाल ही लगायेंगे।

उनकी बातों को सुनकर शेरू मुस्कुराया और उनको 'हैप्पी होली' बोलकर गुफा में चल दिया। ❖

दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. आदर्श सेन 14 वर्ष
   परवारीपुरा मऊरानीपुर,
   जिला : झाँसी (उ.प्र.)

2. दीपांशु मांगल 9 वर्ष
   गाँव : धर्मपुरा, पोस्ट : लैंडर कीमा,
   जिला : कैथल (हरियाणा)

3. वंशज यादव 10 वर्ष
   टावर ए–3/0202, ओमेक्स रेजीडेंसी–2,
   सरसावन सुल्तानपुर रोड, अर्जुन गंज
   लखनऊ (उ.प्र.)

4. इशाना ठुकराल 8 वर्ष
   6/65, दूसरी मंजिल,
   गीता कॉलोनी, दिल्ली

5. रिद्धि सैनी 8 वर्ष
   आरजेडजी–846–ए, गली नं. 17,
   राजनगर पार्ट–2, पालम कॉलोनी,
   नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

नमन राजभर (मनौरी, प्रयागराज),
नक्श, तारूश सेठी (मलोट)
आश्रित त्रेहान (कानपुर),
अभय असनानी, कुश खिमानी, जाह्नवी
देवानी, हर्षित लालवानी, यश भोजवानी, परी
समियानी, वेदान्त, मान्यता अडवानी, सुमित,
मुस्कान रूपानी, हार्दिक, लहर, चाँदनी
मूलचंदानी, प्रान्ती जोशी (गोधरा),
कोमल, पुष्पित सिंह, कर्ण, सुखमनी कौर,
मनजीत कौर, निरमत सिंह, अभिजोत कौर,
सन्नी, लखविन्दर राम, कुसुमप्रीत कौर,
वंदिता, आशिमा (भटिंडा)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 31 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें अच्छी लगती हैं और हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

स्तम्भों में 'अनमोल वचन', 'क्या आप जानते हैं?' और 'पढ़ो और हँसो' मुझे बहुत पसन्द हैं।

– पूरन सिंह सैनी (पालम, नई दिल्ली)

हँसती दुनिया पत्रिका पढ़ने के लिए मुझे मेरे दादा जी ने प्रेरित किया। मुझे अब पत्रिका का बेसब्री से इंतजार रहता है। 'स्तम्भ' के अंतर्गत सभी स्तम्भ बहुत अच्छे लगते हैं।

दिसम्बर माह की कहानियों में 'नियमित पढ़ाई' और 'दुश्मन बने दोस्त' अच्छी लगीं।

'हँसती दुनिया' रोचक व ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है, बच्चों एवं नौजवानों को इसे पढ़ना चाहिए।

– तुषार भिरानी (मूर्तिजापुर)

पहेलियों के उत्तर

1. अखबार, 2. अजमेर, 3. दिल्ली, 4. मिर्ची, 5. घड़ी, 6. मन्दिर, 7. हरिश्चन्द्र, 8. पुस्तक, 9. धरती, 10. संस्कृत।

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication	:	Sant Nirankari Satsang Bhawan, Sant Nirankari Colony, Delhi-110009
2. Periodicity of Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Rakesh Mutreja
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 180, Avtar Enclave, Paschim Vihar, Delhi-110063
4. Publisher's Name	:	Rakesh Mutreja
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 180, Avtar Enclave, Paschim Vihar, Delhi-110063
5. Editor's Name	:	Dr. Vijay Sharma (Chief Editor)
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 7/254-B, Second Floor, Sant Nirankari Colony, Delhi-110009
6. Name & Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.	:	Sant Nirankari Mandal Sant Nirankari Colony, Delhi - 110009

I, Rakesh Mutreja, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1-03-2024

—Rakesh Mutreja
Publisher

Download The App

Sant Nirankari Mission "SNM" App
The application is available for the iOS & Android smartphones.

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

Scan QR code

Scan QR code to download Sant Nirankari Mission "SNM" App

For iOS Devices

For Android Devices

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**